राजनीति में भी छलकपट से दूर रहे बाबू जी

चंडीगढ़, 11 सितंबर (ट्रिन्यू)। आज से 85 वर्ष पूर्व हरियाणा की पावन धरती पर जन्मे उच्चतर कोटि के स्वतंत्रता सेनानियों में निस्वार्थ भाव, निष्ठा व निडरता में स्वर्गीय बाबू मूलचंद जैन, जिनकी 12 सितंबर को पुण्यतिथि है, का असाधारण स्थान रहा है। वह राजनीति में रहते हुए भी छलकपट से दूर रहे।

बाबू जी को हरियाणा का गांधी माना जाता है। बाबू जी स्वयं एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे और एक अत्यंत साधनहीन छोटे से गांव में पले-पढ़े और बड़े हुए। जीवन के आरम्भिक वर्षों से ही उन्हें अथक परिश्रम व संघर्ष करना पड़ा। पांचवीं श्रेणी के बाद ही उच्च शिक्षा के लिए 5-6 किलोमीटर पैदल चल कर गोहाना जाते, चिलचिलाती धूप में वापस आते, घर में पिता के साथ घरेलू कार्यों में जुट जाते। हाई स्कूल से इंटर कालेज रोहतक, वहां से स्नातक की पढ़ाई के लिये लाहौर और फिर अंत में कानून की परीक्षा। उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त कर छात्रवृत्तियां अर्जित कीं। कानून की

आज पुण्यतिथि पर विशेष

परीक्षा में तो पूर्व अविभाजित पंजाब में प्रथम रहने पर स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। इन्होंने गोहाना वापस आकर वकालत की प्रेक्टिस आरम्भ की और साथ ही स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े। 1939 में जमींदारा लीग के सदस्यों जो आन्दोलन के विरोधी थे, गोहाना में जलसे करने के कारण उन्हें मार-मार कर घायल कर दिया। उन्होंने 6 मार्च 1941 को अपने जन्म स्थान सिकन्दरपुर माजरा से गांधी जी की पुकार पर व्यक्तिगत सत्याग्रह के अंतर्गत पहली व अंतिम गिरफ्तारी दी।

उल्लेखनीय है कि व्यक्तिगत सत्याग्रह में वही लोग भाग ले सकते थे जो गांधी जी की 11 शर्तों पर पूर्ण उतर सकते थे। बाबू जी विद्यार्थी काल से ही लगभग इन सभी नियमों का पहले से ही अनुकरण करते थे इसलिये इन्हें यह नियम मानने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। बच्चों की परवाह किये बिना ये समस्त जीवन आन्दोलन को सफल बनाने तथा गांव-गांव, पैदल व साइकिल पर घूम-घूम कर बच्चों, बूढ़ों व जवानों को प्रेरित करते रहे।

गौरतलब है कि बाबू जी ने जो कुछ भी किया, जहां कहीं भी रहे, जिस किसी भी पद पर रहे, उनके जीवन के आदर्श कायम रहे। फिर चाहे उनका अपना वकालत का पेशा हो या जेल हो या समाज में कोई किसी के प्रति अन्याय के विरुद्ध लड़ाई हो या आजादी के बाद विधानसभा या लोकसभा के सदस्यकाल में या फिर सरकार में मंत्री पद या विरोधी पक्ष के नेता के रूप में रहे हों, हमेशा सौम्यता, शालीनता, मेहनत व ईमानदारी भाव से अपने आदर्शों एवं मर्यादाओं का पालन जीवन के अंतिम क्षण तक करते रहे।

बाबू जी का जीवन जनतांत्रिक मूल्यों का एक ज्वलंत तथा सशक्त उदाहरण है। उनमें जीवन पर्यन्त चेतना तथा ऊर्जा अतुलनीय थी। प्रसिद्ध पत्रकार, स्वर्गीय विद्यासागर के शब्दों में हरियाणा व हरियाणा वासियों की समस्याओं के प्रति बाबू जी की संवेदनशीलता मात्र औपचारिक नहीं थी वरन् बराबर उनका यह प्रयास रहा कि जनसमस्याओं का समाधान मानवीय पहलू से किया जाए।

downloaded from moolchandjain.org